## फेसबुक से बजरंग मुनि जी के महत्वपूर्ण विचार

### 1– जनमानस को भ्रमित करने वाला मिडिया रिर्पोट :–

मैं स्वतंत्रता से लेकर अब तक देखता हूँ कि सच्चाई को मीडिया गलत ढंग से छुपाता है। स्वतंत्रता के बाद गरीब लोगों की वार्षिक प्रगति लगभग एक प्रतिशत है और अमीरों की बारह प्रतिशत। इस अमीर और गरीब का औसतन 6 प्रतिषतही प्रगति होता है। इसका यह अर्थ नहीं कि गरीबों का जीवन स्तर नहीं सुधरा। गरीबों का जीवन स्तर चींटी की चाल से सुधर रहा है और अमीरों का हवाई जहाज की चाल से। इस सच्चाई को छुपाना उचित नहीं। आज मैंने दैनिक भास्कर का एक संपादकीय पढ़ा। जिसमें जानबूझकर आंकड़े छिपाने की कोशिश की गई है। मैं जानबूझकर शब्द प्रयोग कर रहा हूँ। क्योंकि लेखक ने लिखा है कि भारत में पिछले 8 वर्षों में प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो गई है लेकिन यह अर्ध सत्य है। क्योंकि यदि महंगाई को घटाकर देखा जाए तो 8 वर्षों में प्रति आय सिर्फ 35 प्रतिषत बढ़ी है। यहां तक मैं लेखक के विचारों से सहमत हूँ। लेकिन उन्होंने आगे लिखा है कि इस प्रगति में वास्तविक आय सिर्फ अमीरों की बढ़ी है गरीबों की तो कुल मिलाकर घटी है। लेखक ने यह भी लिखा है कि गांव में दो पहिया वाहन, टूथपेस्ट, तेल, साबुन जैसे सामानों की बिक्री शहरों के मुकाबले कम हो गई है। लेकिन लेखक ने यह नहीं लिखा कि 8 वर्ष पहले किसी गरीब को एक दिन की मजदूरी कितनी मिलती थी और आज कितनी मिलती है। लेखक ने यह नहीं लिखा कि 8 वर्षों में मुद्रास्फीति की तुलना में अन्य आवश्यक वस्तुएं कितनी सस्ती हुई है। लेखक ने यह भी नहीं लिखा कि शराब की बिक्री बढ़ी है। मैं यह चाहता हूँ कि सत्य को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत करने से समाज में भ्रम फैलता है। हर आदमी प्रत्यक्ष देख रहा है कि सोना, चांदी और जमीन छोड़कर सभी वस्तुएं सस्ती हो रही है। मैं लेखक से इस संबंध में उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा। अन्य विद्वान भी इस संबंध में कुछ लिखें तो मुझे खुशी होगी। मेरा यह मत है कि आर्थिक असमानता लगातार बढ़ रही है, गरीबी घट रही है, मुद्रास्फीति बढ़ रही है और महंगाई घट रही है।

### 2– समाजवादी महासचिव रामगोपाल यादव का डर :–

उत्तर प्रदेश समाजवादी पार्टी के महासचिव रामगोपाल यादव ने स्पष्ट किया है कि अतीक अहमद के बेटे की भी हत्या की जाएगी और अन्य भी जो अपराधी मिलेंगे उनकी हत्या की जाएगी। रामगोपाल यादव ने जो कुछ कहा उसमें गलत क्या है। अगर भारत की समाजवादी पार्टी अतीक अहमद को प्रधानमंत्री बनाना चाहे तो उन्हें कौन रोक रहा है। पहले भी उन्हें छूट थी और अब भी है। उन्हें स्वतंत्रता है कि वह अखिलेश यादव की जगह अतीक अहमद के बेटे को ही मुख्यमंत्री घोषित कर दे। मैं व्यक्तिगत रुप से रामगोपाल यादव की संभावनाओं को सत्य देखना चाहता हूँ और उन लोगों को मरता हुआ देखना चाहता हूँ। जिन्होंने आतंक का सहारा लेकर समाज में भय पैदा कर दिया है। यदि सही काम गलत तरीके से होता है तो वह कार्य गैरकानूनी तो हो सकता है लेकिन अपराध नहीं। इस विषय पर न्यायपालिका को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि रामगोपाल यादव का विचार कितना उचित है और न्यायपालिका अब तक जिस तरह ऐसे अपराधियों पर लगाम लगाने में असफल रही है उसके लिए न्यायपालिका दोषी है या नहीं। हमें भारत में न्याय चाहिए, हमें भारत में सुरक्षा चाहिए। चाहे न्याय और सुरक्षा कानून सम्मत तरीके से मिले अथवा गैर कानूनी तरीके से। यदि न्याय और सुरक्षा खतरे में होगा तो कानून बदलने की आवश्यकता है। न्याय और सुरक्षा की परिभाषा नहीं बदली जा सकती। मैं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की घोषणा से सहमत हूँ और सपा महासचिव रामगोपाल यादव की संभावना को सच देखना चाहता हूँ।

### 3– महिला अधिकार की समीक्षा भाग–1 :–

आज विश्व महिला दिवस है। आज का दिन महिला सशक्तिकरण का रोना रोने के लिए मनाया जाता है। पश्चिम की दुनिया परिवार व्यवस्था को सामाजिक मान्यता नहीं देती। लेकिन भारतीय संस्कृति में परिवार व्यवस्था को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह पश्चिम से आया हुआ महिला दिवस वास्तव में परिवार तोड़ो दिवस है। मैंने आज नव भारत समाचार पत्र पलट कर देखा। समाचारों में एक मात्र महिला एएसपी चंचल ने बयान दिया है कि महिला और पुरुष परिवार में एक–दूसरे के पूरक हैं। इनके बीच में सहमति का भाव होना चाहिए, प्रतिस्पर्धा का नहीं। परिवार सशक्तिकरण में दोनों की एकता बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर अन्य अनेक महिलाओं के लेख मिले जिनमें पुरुषों को शोषक बताया गया है। ऐसी महिलाओं में से एक से मैंने बात की कि आपके परिवार को मैं जानता हूँ और मैं आपके परिवार के पुरुष सदस्यों को यह समझाने का प्रयास करूंगा कि आपके साथ गलत हो रहा है। इस पर वह महिला नाराज हो गई। जो भी महिलाएं पुरुषों के खिलाफ लिख रही है उन सबका व्यक्तिगत अनुभव बिल्कुल अलग है। लेकिन यदि इस प्रकार की महिलाओं का आंतरिक आकलन किया जाए तो उन सबके संबंध परिवार में अच्छे हैं। ऐसा लिखने वाली महिलाएं अपने–अपने पुरुषों के साथ मिलकर पूरे समाज को ब्लैकमेल करना चाहती है। पति भी अच्छे पद पर हैं और पत्नी भी अच्छे पद पर जाना चाहती है इसलिए इन महिलाओं को महिला शोषित दिखती है। जबकि लिखने वाली महिलाएं स्वयं शोषक है।

नवभारत अखबार में मैंने एक और लेख पढ़ा जिसमें लिखा गया है कि भारत में 53 फीसद महिलाएं कभी घर से बाहर नहीं निकलती है। भारत में घर से बाहर निकलकर काम करने वाली महिला सबसे कम है, वे सिर्फ 27 प्रतिषत है। नवभारत अखबार में लेख लिखने वाले ने बहुत झूठ बोला है। भारत की आबादी का 70 प्रतिषत लोग श्रमजीवी हैं, गरीबी रेखा से नीचे रहते हैं। इन 70 प्रतिषत श्रमजीवियों मे से अधिकांश महिलाएं बाहर काम करने जाती हैं। कुछ तो संपन्न परिवारों से भी महिलाएं ऑफिस में काम करती हैं। मुझे नहीं पता कि लेखक ने भारत की किन महिलाओं काऑकड़ा प्रस्तुत किया है। मैं खुद जिस जिले

में रहता हूँ, उस जिले की 95 प्रतिषत महिलाएं घर से बाहर निकलती है, बाजार भी जाती है और उनमें से अधिकांश मजदूरी भी करती है। किसी पश्चिमी देषों के आकलन को सच मानकर आज महिला दिवस के दिन इस प्रकार हाईलाइट करना किसी भी दृ ष्टि से उचित नहीं है। भारत में 27 प्रतिषत महिलाएं ही काम करती हैं और अन्य महिलाएं काम नहीं करती हैं, यह आकलन पूरी तरह गलत है। ऐसा लिखने वाले पुरुष और महिलाएं सारी सुविधाएं अपने परिवार में जुटा लेना चाहते हैं। जिससे कि दूसरे कमजोर परिवारों में एक दाना भी ना चला जाए। मैं पहले से माँग करता रहा हूँ कि 'एक परिवार, एक रोजगार' तक सरकार का दायित्व मान लिया जाए। महिला अधिकारों पर बढ़–चढ़कर लिखने वाली महिलाएं स्वयं ऑप्शन देने लगेंगी कि उनके पति ही नौकरी करें और मैं घर पर रहूँगी। सुविधाओं को लूट–लूट कर अपने परिवार में जमा करने का स्वप्न देखने वाली महिलाएं और झूठे आँकड़े समाचार पत्रों में छपवाने वालों से हमारे भारतीय समाज को सावधान रहना चाहिए।

**4– महिला अधिकार की समीक्षा भाग–2 :–**

महिला दिवस के अवसर पर लिखे गये मेरे पोस्ट पर बहुत ही अच्छी चर्चा हुई। कुछ महिलाओं ने और पुरूषों ने यह प्रश्न जरूर उठाया कि महिलाएं पुरुषों की जन्मदाता हैं इसलिए महिलाओं को विशेष अधिकार मिलना चाहिए। इस प्रश्न पर मैंने विचार किया तो पाया कि महिलाओं को माँका दर्जा प्राप्त है लेकिन महिलाएं माँहोने के कारण सिर पर चढ़ेगी तो हमें यह बात भी कहने की आजादी है कि कोई भी महिला अकेले किसी बच्चे को जन्म नहीं देती। वह यदि माँ है तो उसके साथ एक पुरुष भी जुड़ा हुआ है। इसलिए मेरा मानना है कि आपकोमाँहोने का घमंड करने की जरूरत नहीं है। आज कैसी दुर्दशा हो गई है कि महिलाओं को लोग नौकरी पर रखने से डर रहे हैं, क्योंकि पता नहीं कब क्या कह देंगी, क्या कलंक लगा देंगी क्योंकि आधुनिक महिलाएं इस तरह के झूठे कलंक लगाती हैं पारंपरिक महिलाओं से ऐसा कोई डर नहीं होता। लेकिन यह आधुनिक महिलाएं ही नौकरी करती हैं।सच्चाई यह है कि महिला और पुरुष का संबंध आग और पेट्रोल के समान हैं। अगर दूरी घटेगी तो ब्लास्ट का खतरा बढ़ेगा और दूरी बढ़ जाएगी तो सृजन रुकेगा इसलिए दूरी संतुलित होनी चाहिए। महिलाएं एक तरफ उस दूरी को घटाना चाहती हैं और दूसरी तरफ ब्लास्ट का रोना रोती हैं। यह दोनों बातें एक साथ नहीं चलेंगे।

आज आधुनिक महिलाओं को यह बात साफ करनी होगी कि उन्हें समान अधिकार चाहिए अथवा विशेष अधिकार चाहिए। आपको समान अधिकार भी चाहिए और विशेष अधिकार भी चाहिए ऐसा कभी नहीं हो सकता है क्योंकि संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार दिए गए हैं।यदि आपको कोई विशेष अधिकार चाहिए तो आपको अपना कोई अधिकार छोड़ना होगा और यदि आप इसके लिए तैयार नहीं हैं तो आप समान अधिकार की बात करिए। विशेषाधिकार की बात करने वाली धूर्त महिलाओं से समाज को बचाने की जरूरत है। ऐसा लगता है कि राजनेताओं और इन धूर्त महिलाओं के बीच में सांठ–गांठ हो गई है और इसलिए हमारे भारत की राजनीतिक व्यवस्था पश्चिम का अंधानुकरण करते हुए परिवार व्यवस्था को तोड़ने में लगी हुई है। हम आप सब इस खतरे को उठाने से बचें। इन 2 प्रतिषत आधुनिक महिलाओं के जाल से बचें और महिला सशक्तिकरण के नारे का विरोध करें। सभी समस्याओं का सबसे अच्छा समाधान है समान नागरिक संहिता।

**5– ब्राह्मणों और मुसलमानों की महत्वाकांक्षा :–**

भारत को जब से स्वतंत्रता मिली तब से ही नेहरू परिवार के नेतृत्व में भारत के प्रमुख ब्राह्मणों ने व्यक्तिगत सत्ता को अधिक महत्व दिया और मुसलमानों ने सामूहिक सत्ता को महत्वपूर्ण माना। परिणाम स्वरूप अधिकांश उच्च पदों पर भारत के ब्राह्मण काबिज हो गए। न्यायपालिका से लेकर कार्यपालिका तक भी इन्हीं लोगों का वर्चस्व रहा और इन लोगों ने मुसलमानों के पक्ष में इतने अधिक एकपक्षीय कानून बनाएं कि भारत का हिंदू दूसरे दर्जे का नागरिक होकर रह गया। साम्यवादियों में भी ब्राह्मणों का ही वर्चस्व था और इन सब ने भी व्यक्तिगत सत्ता को अधिक महत्वपूर्ण माना। 20–30 वर्षों के बाद भारत के ब्राह्मणों का मोह भंग हुआ और उनका हिंदुत्व जागा। दूसरी ओर मुसलमानों में भी व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ा और उनकी एकता छिन्न–भिन्न होकर कई जगह विभाजित हो गई। नरेंद्र मोदी की सामूहिकता की नीति और मुसलमानों का आपसी विभाजन ये दोनों मुख्य कारकबने जिससे कि अब भारत का हिंदू एकजुट होकर हिंदू राष्ट्र की माँग कर रहा है और निर्णय मुसलमानों को करना है कि वह समान नागरिक संहिता चाहते हैं अथवा हिंदुओं की एकजुटता। कोई भी विपक्षी दल मुसलमानों का लोभ नहीं छोड़ पा रहा है लेकिन अब भारत में यदि मुसलमानों ने आगे आकर कॉमन सिविल कोड की माँग नहीं की तो भारत हिंदू राष्ट्र बन जाएगा। भारत का मुसलमान चुपचाप ईशनिंदा कानून का समर्थन करता है। मुसलमानों को शरिया चाहिए समान नागरिक संहिता नहीं। भारत का हिंदू समान नागरिक संहिता पर तो मुसलमानों के साथ समझौता कर सकता है लेकिन यदि धर्म के आधार पर कानून बने तो भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए एकजुट हो जाएगा। अभी–अभी हरियाणा में दो मुसलमानों की अनावश्यक हत्या हुई और उत्तर प्रदेश में दो अपराधी मुसलमानों की गैर कानूनी रूप से पुलिस ने हत्या की। सारे देश का समर्थन उत्तर प्रदेश सरकार के साथ है और हरियाणा के मामले में हिंदू विभाजित है। अब भारत का हिंदू मुस्लिम कानूनों की गुलामी नहीं करेगा। भारत का मुसलमान जिस धर्मनिरपेक्ष कानून का घमंड करता है उसमें भी संवैधानिक तरीके से बदलाव हो जाएगा। न्यायपालिका भी धीरे–धीरे हिंदुत्व की भावना से प्रभावित हो रही है। और मुसलमान इस खतरे को समझ नहीं पा रहा है। वह तो अधिक से अधिक संसद में जाना चाहता है जबकि कार्यपालिका न्यायपालिका और संसद में भी उसकी संख्या घटती जा रही है। भारत के मुसलमानों के लिए यह उचित होगा कि भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने का सपना छोड़ दें और कॉमन सिविल कोड का समर्थन करें। तब तो हिंदू भी हिंदू राष्ट्र का समर्थन करना छोड़ देंगे अन्यथा हम लोगों के लिए हिंदू राष्ट्र का समर्थन करना मजबूरी बन

जाएगा। हम लोग राजनीति के पक्षधर कभी नहीं रहे हैं लेकिन यदि मजबूत इस्लाम और हिंदू राष्ट्र में से किसी एक को चुनना हुआ तब हम लोग मजबूर होकर इस्लामिक राष्ट्र का विरोध करेंगे भले ही हिंदू राष्ट्र बन जाए।

**6– मोदी के असली समर्थक कौन :–**

यह साफ दिखता है कि नरेंद्र मोदी के इतना शक्तिशाली होने में हिंदुओं की अपेक्षा कट्टरपंथी मुसलमानों का अधिक योगदान है। इन्होंने हिंदुओं और संघ के बारे में ऐसी–ऐसी जहरीली बातें कही जिसके कारण भारत के हिंदू इकट्ठा होते चले गये। जिस तरह से उत्तर प्रदेश में कुछ मुसलमानों ने कांग्रेस और सपा के साथ मिलकर हिंदुओं पर अत्याचार किए। उन अत्याचारों ने भी नरेंद्र मोदी को मजबूत होने में मदद की। उत्तर प्रदेश का एक मुस्लिम खानदान कई वर्षों से योगी को मजबूत कर रहा है। उस खानदान की गुंडागर्दी को सुन–सुनकर हिंदुओं की रूह कांप जाती है। नेहरू परिवार हमेशा इस भ्रम में रहा कि मुसलमान हमेशा एकजुट रहेगा और उनकी एकजुटता अजर–अमर है। आगे धीरे–धीरे कांग्रेस की नीतियों के कारण मुसलमानों की आबादी और तेजी से बढ़ेगी और उतना ही तेजी से कांग्रेस का ग्राफ बढ़ता जाएगा। पहले जिस तरह कांग्रेस पार्टी लंबे समय तक अजर–अमर दिख रही थी उससे भी अधिक वर्तमान समय में नरेंद्र मोदी अजर–अमर दिख रहे हैं। लेकिन हिंदुओं को भी यह सोचना होगा कि जो गलती सांप्रदायिक मुसलमानों ने की वही गलती हिंदुओं को नहीं दुहरानी चाहिए। मैं मानता हूँ कि सांप्रदायिक मुसलमानों ने सरकार के साथ समझौता करके हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना करके रखा। तो जो हिंदू मोदी जी से ऐसी अपेक्षा कर रहे हैं कि वे भी कुछ समय तक मुसलमानों को दूसरे दर्जे का नागरिक बनाएं। तो ऐसा सोचने वाले पूरी तरह गलत है। नेहरू परिवार गांधी टोपी लगाकर गांधी को ठग रहा था तो नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत बिना गांधी का नाम लिए गांधी मार्ग पर चल रहे हैं। बहुत वर्षों के बाद अखबारों में प्रवीण तोगड़िया का एक जहरीला बयान छपा है। प्रवीण तोगड़िया ने बयान दिया है कि पाकिस्तान इस समय संकट में है और भारत पाकिस्तान को गेहूँ भेजना चाहता है। नरेंद्र मोदी की यह नीति पूरी तरह गलत है। भारत का गेहूँ पाकिस्तान को देने की अपेक्षा भारत के हिंदुओं को खिला दिया जाए। इस प्रकार की सांप्रदायिक भाषा बोलने वाला हिंदू नहीं हो सकता क्योंकि ऐसी गंदी भाषा मुसलमान की है। गेहूँ भारतीयों को खिलाया जाएगा या हिंदुओं को इस प्रकार का भेदभाव कोई मूर्ख ही कर सकता है। पाकिस्तान का कट्टरपंथियों के हाथ में जाना भारत के लिए अधिक खतरनाक है इसलिए पाकिस्तान में भी लोकतंत्र जिंदा रहे, इस विषय पर भारत सरकार सावधान है और उसे सावधान रहना भी चाहिए। यह प्रवीण तोगड़िया सरीखे कट्टरपंथियों की भाषा पर भारत सरकार को ध्यान नहीं देना चाहिए। इस संबंध में संघ बहुत सावधान है। यदि कोई मुसलमान मस्जिद में नमाज भी पढता है और समान नागरिक संहिता को स्वीकार करता है उसे संघ परिवार अछूत नहीं मान रहा है, यह बहुत अच्छी बात है। मैं कट्टरपंथी मुसलमान के साथ–साथ प्रवीण तोगड़िया सरीखे कट्टरपंथी हिंदुओं से भी निवेदन करता हूँ कि जिस सांप्रदायिक उन्माद पर कांग्रेसी चल रही थी उसी सांप्रदायिक उन्माद पर मोदी को ले जाने की सलाह देना ठीक नहीं है। नरेंद्र मोदी मजबूत हो यह काम तो मुसलमान अपने आप कर रहा है हमें क्यों अपनी भाषा बिगाड़नी चाहिए।

**7– विपक्ष की बौखलाहट :–**

आज मैं टीवी देख रहा था। मैंने देखा कि कुछ लोग मोदी के मृत्यु की कामना कर रहे हैं तो कुछ लोग अमेरिका और ब्रिटेन से उम्मीद कर रहे हैं कि वह भारत को नरेंद्र मोदी से मुक्ति दिलाएगा। कुछ लोग तो पहले पाकिस्तान से भी ऐसी उम्मीद कर रहे थे। यद्यपि पाकिस्तान से उन्हें निराशा हाथ लगी है। कुछ लोग चीन से भी उम्मीद करते हैं कि चीन मोदी से मुक्ति दिलाएगा। लेकिन मोदी ने कभी ऐसा काम नहीं किया कि उसके शत्रु मर जाएं क्योंकि शत्रु को पराजित करने में आनंद आता है। निराश लोग मृत्यु की कामना करते हैं, बहादुर लोग नहीं। विपक्ष तो निराश होकर हार मान बैठा है।उन्हें ऐसी उम्मीद नहीं थी। धीरे–धीरे यह दिख रहा है कि विपक्ष अब हार मान चुका। मैं तो बहुत पहले से कई बार लिख चुका हूँ कि मोदी जीवन भर प्रधानमंत्री रहेंगे।

**8– राजनीतिक व्यवस्थाका अंधानुकरण और देश की समस्याएं :–**

राजनीतिक व्यवस्था अलग होती है और प्रायः स्थायी होती है। अनेक देशों में सरकारें तो बदल जाती है लेकिन व्यवस्था आमतौर पर नहीं बदलती। भारत में भी नेहरू परिवार से जो राजनीतिक व्यवस्था चली आ रही थी उसी व्यवस्था का अनुसरण अटल जी ने भी किया था तथा अन्य प्रधानमंत्रियों ने भी किया था। वह व्यवस्था किस प्रकार की थी कि उसने मुसलमान, कम्युनिष्ट, पाकिस्तान, चीन, रूस एक साथ जुड़े हुए थे और भारत इन सब के पक्ष में था। भारत पश्चिम के लोकतंत्र का विरोध करता था और चीन इस्लाम की तानाशाही के पक्ष में था। भारत में कश्मीर को अधिक से अधिक स्वतंत्रता दी गयी। कश्मीर पाकिस्तान बनने वाला था। भारत में आयात को प्रोत्साहित किया गया, खपत को प्रोत्साहित किया गया और भारतीय उद्योगों को नुकसान पहुंचाया गया। हड़ताल और चक्काजाम के कारण भारतीय उद्योग बर्बाद होते चले गए। भारत में सरकारीकरण को बहुत महत्व दिया गया और निजीकरण को कमजोर किया गया क्योंकि भ्रष्टाचार करने के लिए सरकारीकरण ही बहुत महत्व रखता है। भारत में महंगाई बेरोजगारी जैसी अनावश्यक समस्याओं को बहुत महत्व दिया गया जबकि हिंदुत्व को लगातार दबाया गया। भारत में वर्ग विद्वेष बढाया गया और वर्ग समन्वय को कमजोर किया गया। यह भारत की राजनीतिक संस्कृति थी जो 2014 तक बराबर चलती रही। लेकिन नरेंद्र मोदी के आने के बाद इस संस्कृति में आंशिक बदलाव हुआ है और अब भारत तकनीकी पर चल रहा

है। रूस, चीन की ओर झुका हुआ भारत अब नहीं है। अब तो भारत समान नागरिक संहिता की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इस्लाम की तरफ झुका हुआ नहीं। अब भारत महंगाई, बेरोजगारी जैसे अस्तित्वहीन समस्याओं से मुक्त हो रहा है। अब भारत अपना आयात घटा रहा है और निर्यात बढ़ा रहा है। अब भारत बड़े–बड़े उद्योगपतियों को प्रोत्साहित कर रहा है।

मेरे विचार से महंगाई, बेरोजगारी आदि अस्तित्वहीन समस्याएं हैं जिनको नेहरू खानदान उठाता रहता है।इस्लाम को प्राथमिकता देना भारत के लिए वास्तविक समस्या है। साम्यवादी तानाशाही और वर्ग संघर्ष वास्तविक समस्या है। महंगाई का घटना और सरकारी नौकरियों को रोजगार बताना भारत की वास्तविक समस्या है।

**9– हमें क्या चाहिये सुशासन या स्वशासन :–**

दुनिया में जहां जहां तानाशाही होती है वहां या तो सुराज्य आता है या कुराज्य आता है। दुनिया में जहां जहां भी तानाशाही होती है वहां या तो कुशासन आता है या सुशासन होता है। लेकिन अगर लोकतंत्र होगा तो वहां अव्यवस्था हीहोती है जिसका वास्तविक अर्थ होता है अराजकता।कभी सुव्यवस्था नहीं होती।चीन या मुस्लिम देशों में अव्यवस्था बिल्कुल नहीं है लेकिन भारत में अर्ध तानाशाही रही है। पहले नेहरू परिवार की तानाशाही थी जिसमें कुशासन था। अब भारत में धीरे–धीरे सुशासन आ रहा है लेकिन लोकतंत्र कमजोर हो रहा है, अव्यवस्था घट रही है, अपराधी जेलों में जा रहे हैं और इसका एकमात्र समाधान तो है स्वव्यवस्था। लोक स्वराज्य जो अभी दूर–दूर तक दिखाई नहीं देती। कांग्रेसका कुराज्य और मोदी का स्वराज्य इन दोनों के बीच ही भारत वर्तमान समय में फंसा हुआ है। यह सही है कि कुशासन की अपेक्षा सुशासन अधिक अच्छा होता है और सुशासन की अपेक्षा स्वशासन अधिक अच्छा होता है। हम भारत की आम जनता से प्रार्थना करें कि वह कभी कुशासन को न आने दे लेकिन सुशासन से संतुष्ट ना हो जाए। धीरे–धीरे उसे स्वशासन की ओर बढ़ना चाहिए।

**10– तानाशाही शासन में फंसे हिन्दु नागरिक :–**

भारत के मुसलमानों ने कम्युनिस्टों और कांग्रेस के साथ मिलकर हिंदुओं को दूसरे दर्जे का नागरिक बना कर रखा था। अब भारत समान नागरिक संहिता की बात कर रहा है। यह कांग्रेसी कम्युनिस्ट और मुसलमान समान नागरिक संहिता का विरोध कर रहे हैं। मैं समान नागरिक संहिता के पक्ष में हूँ। मैं इस पक्ष में नहीं हूँ कि मुसलमानों को दूसरे दर्जे का नागरिक बना कर रखा जाए। लेकिन मैं इस पक्ष में जरूर हूँ कि अगर समान नागरिक संहिता नहीं आती है और हिंदू राष्ट्र आता है तो मैं हिंदू राष्ट्र का विरोध नहीं करूंगा। कांग्रेस पार्टी को लोक स्वराज्य की बात करने में शर्म क्यों आती है? गांधी ने तो लोक स्वराज्य कहा था। आज अगर कांग्रेस पार्टी या अन्य विपक्षी दल लोक स्वराज्य की माँग उठाते हैं तो मैं कांग्रेस पार्टी का पूरा–पूरा समर्थन करूंगा क्योंकि मैं लोक स्वराज्य का पक्षधर हूँ, नेहरू शासन का नहीं। नेहरू शासन में कुशासन था और मोदी के समय सुशासन है। लेकिन स्वशासन ही अंतिम लक्ष्य है। मैं भारत के विपक्षी दलों से हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि मोदी का विरोध मत कीजिए। आप वर्तमान तानाशाही का विरोध करिए और साथ में लोक स्वराज्य की माँग करिए। वर्तमान तानाशाही को हटाकर पिछली मुस्लिम कम्युनिष्ठ कांग्रेसी तानाशाही को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम लोक स्वराज्य का समर्थन करेंगे लेकिन यदि पिछले तानाशाही और वर्तमान तानाशाही में से एक को चुनना होगा तो हम वर्तमान हिंदू तानाशाही को चुनेंगे, मुस्लिम तानाशाही को नहीं।

**11– गांधी को धोखा किसने दिया :–**

मैं बहुत अच्छी तरह समझ चुका हूँ कि विपक्षी दलों के समर्थकों की नियत खराब है। उन्हें ना लोकतंत्र से मतलब है ना सुशासन से मतलब है वह तो अपना वही भ्रष्टाचार और अत्याचारी शासन देश के हिंदुओं पर लाद देना चाहते हैं। यह साफ–साफ क्यों नहीं बताते कि हमारे विपक्षी दल या उनके समर्थकों को लोक स्वराज्य का नारा बुलंद करने में क्या दिक्कत है। मैं मुद्गल जी से अथवा अपने अन्य साथियों से पूछना चाहता हूँ, नरेश कुमार शर्मा जी जो हमेशा विपक्ष के साथ रहते हैं मैं अपने अन्य सभी मित्रों से पूछना चाहता हूँ कि उन्हें समान नागरिक संहिता से क्या दिक्कत है। क्या देश में सभी व्यक्तियों के लिए कानून समान नहीं होना चाहिए? क्या जाति के आधार पर भेदभाव महिला पुरुष के आधार पर भेदभाव हिंदू–मुसलमान के आधार पर कानून में कोई भी एक उचित है? भारत में लोक स्वराज्य की क्यों नहीं होना चाहिए? गांधी ने आरक्षण का विरोध किया था, जातिवाद का विरोध किया था। गांधी ने लोक स्वराज्य का पक्ष लिया था। यह गांधी टोपी पहनने वाले और खादी पहनने वाले समान नागरिक संहिता और लोक स्वराज्य के बारे में चुप क्यों है?क्योंकि इनकी नियत खराब है। यह गांधी टोपी पहनकर और खादी पहनकर धर्मनिरपेक्षता का नकाब लगाकर गांधी के विरोध में हमेशा खड़े हैं। गांधी को धोखा गोडसे या सावरकर ने नहीं दिया था। गांधी को धोखा दिया नेहरू ने दिया था। सावरकर और गोडसे ने हिंदुत्व को धोखा दिया था गांधी का तो सिर्फ विरोध किया था लेकिन नेहरू ने गांधी को धोखा दिया। हिंदुत्व का तो विरोध किया। अंबेडकर ने कहीं गांधी को धोखा नहीं दिया था उन्होने गांधी का विरोध किया था। नेहरू का पक्ष लेने वाले बताएं कि उन्हें लोक स्वराज्य का नारा लगाने में शर्म क्यों आती है?

**12– कार्यपालिक सक्रियता की मजबूरी :–**

जब न्याय और कानून के बीच बहुत फर्क हो जाता है तो हमें कानूनों में सुधार करना चाहिए। न्याय की परिभाषा नहीं बदलती है। स्वतंत्रता के बाद हमने कानूनों में न्याय को मजबूत करने के लिए कोई बदलाव नहीं किया इसलिए न्याय कमजोर होता चला गया। न्याय पूर्ण व्यवस्था देना कानून का काम है और कानून विधायिका बनाती है लेकिन विधायिका लगातार असफल होती चली

गई क्योंकि विधायिका के साथ अपराधियों का अघोषित समझौता हो चुका था। ऐसी परिस्थिति में उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने कानून की अपेक्षा न्याय का पक्ष लिया। न्याय के लिए कार्यपालिका ने सक्रियता दिखाई। विधायिका को किनारे छोड़ दिया, न्यायपालिका चुप हो गई और कार्यपालिका ने कलम की जगह डंडे का सहारा लेना शुरू कर दिया। पूरे भारत में जो अपराधी गिरोह बहुत मजबूत हो गए थे, उन गिरोहों को डंडे की ताकत पर कार्यपालिका ने उत्तर प्रदेश में रोकने का प्रयास किया।

मैं मानता हूँ कि यह विधायिका को किनारे करके कार्यपालिक सक्रियता आदर्श स्थिति नहीं है लेकिन यदि विधायिका कानून को न्यायसंगत तरीके से बदलने मेंइच्छुक ना हो अथवा और रुचि न दिखावे, यदि विधायिका अपराधियों के साथ सांठगांठ कर ले तो कार्यपालिक सक्रियता स्वागत योग्य होती है। आज उत्तर प्रदेश में अतीक अहमद दया की भीख माँग रहा है। न्यायालय के पास दौड़ रहा है कि उसके दो बच्चे गायब हो गए हैं लेकिन वह कुछ नहीं कर पा रहा है। यूपी में जो अपराधी अब तक आंख दिखाते रहते थे आज वह आंख नीची करके चल रहे हैं। आज उत्तर प्रदेश में कानून की जगह डंडे का उपयोग किया जा रहा है लेकिन वह हमारे देश के लोगों की मजबूरी है। आदर्श स्थिति में तो हमें विधायिका के साथ चलना ही चाहिए लेकिन यदि विधायिका कानूनों में उचित बदलाव नहीं करती है तो कार्यपालिक सक्रियता ही हमारे पास एकमात्र मार्ग बचता है। अस्थाई रूप से हम कार्यपालिका की इस सक्रियता का समर्थन करते हैं। जब तक कानून ठीक दिशा में काम नहीं करता तब तक तो डंडे का ही उपयोग किया जाएगा।

**13– भ्रष्टाचारियों का गिरता स्तर :–**

भ्रष्टाचार दो प्रकार का होता है, एक होता है सिस्टम का भ्रष्टाचार और दूसरा होता है व्यक्तिगत भ्रष्टाचार। मनीष सिसोदिया ने भी भ्रष्टाचार किया और लालू प्रसाद ने भी किया। मनीष सिसोदिया का भ्रष्टाचार सिस्टम का भ्रष्टाचार था अर्थात उन्होंने चुनाव जीतने के लिए बड़ी मात्रा में भ्रष्टाचार किया था। अभी तक उनका कोई व्यक्तिगत भ्रष्टाचार प्रमाणित नहीं हुआ है। यद्यपि दोनों ही भ्रष्टाचार है। लालू प्रसाद का भ्रष्टाचार व्यक्तिगत भ्रष्टाचार था, सिस्टम का नहीं था। उन्होंने दोनों प्रकार का भ्रष्टाचार किया। आज स्थिति यह आ गई है कि भारत में सामाजिक शर्म नाम की कोई बात नहीं रह गई है। कोई भी भ्रष्ट व्यक्ति जरा भी शर्मिंदा नहीं हो रहा है। बल्कि ताल ठोक कर खुलेआम खड़ा हो जा रहा है कि मैं अकेला भ्रष्ट नहीं हूँ। कुछ समय पहले भाजपा के अध्यक्ष किसी भ्रष्टाचार में पकड़े गए थे।वह जीवन भर ऊपर नहीं उठ सके। कुछ समय पहले ग्रामीण इलाकों के कुछ सांसद मामूली भ्रष्टाचार में पकड़े गए थे लेकिन शर्मिंदा हुए बदनामी हुई छत्तीसगढ़ के राजनेता दिलीप सिंह जूदेव भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए पकड़े गए थे वह जीवन भर नहीं उठ सके। लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव ने जितना भ्रष्टाचार किया था वह व्यक्तिगत भ्रष्टाचार था और दोनो सर उठाकर घूम रहे हैं। कितने दुःख की बात है कि तेजस्वी यादव को जब न्यायालय में यह बात बतायी जाती है कि आप की गिरफ्तारी नहीं होगी तो तेजस्वी यादव अपने को निर्दोष कहने लगते हैं। तेजस्वी यादव के छूटने पर लड्डू बांटे जाते हैं। मिठाइयाँ बांटी जाती हैं,जमकर खुशियां मनाई जाती है। यह आज भ्रष्टाचार का गिरा हुआ स्तर है जो भी भ्रष्ट व्यक्ति समाज से जरा भी डर गया समझो उसका जीवन बर्बाद हो गया और जो भी व्यक्ति समाज को डरा सकता है वह सीना तान कर खड़ा है। साफ दिख रहा है कि लालू यादव और उनका परिवार को जेल से जमानत मिलने के बाद भी लड्डू बांट रहे हैं, खुशियां मना रहे हैं और यह कहकर नाच रहे हैं कि हमें जेल नहीं जाना पड़ा।अब समाज को इतना मजबूत बनाने की आवश्यकता है कि कोई भी व्यक्तिगत भ्रष्टाचार करने वाला व्यक्ति सिर उठाकर यह न कह सके कि मैं अकेला भ्रष्ट नहीं हूँ।

**14– अलगाववादी–समस्या और समाधान :–**

पंजाब में जो नया भिंडरावाला तैयार हो रहा था उसे प्रारंभ में ही जिस तरीके से रोकने का प्रयास किया गया, वह तरीका स्वागत योग्य है। मैं नहीं कह सकता कि इसमें केंद्र सरकार की कितनी भूमिका है और पंजाब सरकार की कितनी है लेकिन पहल चाहे जहां से हुई हो, यह बहुत अच्छी सफलता है। पंजाब की समस्या के कारण ही इंदिरा गांधी की हत्या हुई, बेअंत सिंह की भी हत्या हुई लेकिन फिर भी पंजाब की समस्या खत्म नहीं हुयी।इस बार जिस तरह अमृतपाल सिंह को देश से भगा दिया गया अथवा वह भाग गया, यह बहुत बड़ी सफलता है। इंदिरा गांधी की शह पर भिंडरावाले ने पंजाब में एक खतरनाक अलगाववादी आतंकी समूह को पैदा किया था, पाला पोसा था और संगठन के मजबूत हो जाने पर भिंडरावाले ने इंदिरा गांधी की ही जान ले ली थी। इसी तरह की भूल अरविंद केजरीवाल भी करने जा रहे थे लेकिन अरविंद केजरीवाल या भगवंत मान ने उस भूल को तुरंत सुधार लिया। जिसे सुधारने में इंदिरा गांधी को वर्षों लंबा समय लगा था। मैं इस भूल सुधार के लिए आम आदमी पार्टी तथा केंद्र सरकार दोनों को बधाई देता हूँ और मैं समझता हूँ कि कश्मीर जिस तरह शांत हुआ उसी तरह पंजाब को भी शांत कर लिया जाएगा। धर्म के आधार पर न कभी सरकार चल सकती है और ना चलनी चाहिए।

**15– राहुल गांधी झूठ का जहाज उड़ाते है :–**

राहुल गांधी एक निहायत ही शरीफ आदमी है, अपनी जबान का पक्का है।वह जो वादा करता है उस वादे को अंत तक निभाता है। राहुल गांधी को झूठ बोलने की जरा भी अक्ल नहीं है, राजनीति में तो बिल्कुल ही अनाड़ी है। राहुल को नेहरू नहीं गांधी बनना चाहिए था लेकिन दुर्भाग्य से सोनिया गांधी ने राहुल को राजनीति में धकेल दिया। राहुल में समझदारी और चालाकी नहीं, शराफत है लेकिन उन्हें राजनीति में कूद पड़ने के कारण हमेशा झूठ बोलना पड़ता है।झूठ बोलने के लिए जितनी अकल चाहिए, वह राहुल में नहीं है। राहुल साफ बोलने वाले आदमी हैं। यही कारण है कि राहुल जब अपनों के बीच बोलते हैं तो सच बोलते हैं और साफ–साफ बोलते हैं। और वही जब सार्वजनिक मैदान में राजनैतिक भाषा बोलते हैं तो कभी सच नहीं बोलते हमेशा झूठ

बोलते हैं और झूठ बोलते हैं तो पकड़े जाते हैं। राफेल का मामला हो या पुलवामा का मामला हो, राहुल गांधी झूठ बोलते हुए पकड़े गए। कोरोना के मामले में भी उनकी वही दुर्गति हुई।

वर्तमान समय में भी 'देष जोड़ो यात्रा' के दौरान राहुल गांधी ने महिलाओं के संबंध में जो बोला वह पूरी तरह झूठ था और वह झूठ भी पकड़ा गया। राहुल ने यह कहकर सनसनी फैला दी कि उनसे यात्रा के दौरान कई महिलाओं ने आकर यौन शोषण की बात बताई।उनसे महिलाओं ने यह भी कहा कि पुलिस में शिकायत करने के बाद भी उनकी बात नहीं सुनी गई। राहुल गांधी ने यह मनगढ़न्त कहानी लोगों के सामने कहीं। लेकिन यह पूरी तरह अविश्वसनीय कहानी है क्योंकि कोई भी महिला भीड़ में जाकर यह कभी नहीं कहती कि उसके साथ यौन शोषण हुआ है। राहुल ने तो अकेले में कभी महिला से बात नहीं की। यह भी हो सकता है कि किसी महिला ने राहुल गांधी के सामने आकर यौन शोषण की बात यह सोचकर बतायी हो कि राहुल कुंवारा है इसलिए यह बात कहने का उसे कोई लाभ हो सकता है। सच्चाई जो भी हो लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि राहुल गांधी कभी सच नहीं बोलते और जब भी झूठ बोलते हैं तो पकड़े जाते हैं। महिलाओं के संबंध में भी उन्होंने एक नयी झूठी कहानी कह कर अपने को फंसा दिया। राहुल गांधी को अब तो राजनीति की कमान पूरी तरह प्रियंका के हवाले कर देनी चाहिए और स्वयं सामाजिक दिशा में आगे आकर काम करना चाहिए।

**16— ममता की राहुल के प्रति ममता :—**

ममता बनर्जी की गिनती बहुत चालाक राजनेताओं में की जाती है। ममता बनर्जी ने यह महसूस किया की राहुल गांधी भारतीय जनता पार्टी की कठपुतली बने हुए हैं। भारतीय जनता पार्टी चाहती है कि राहुल गांधी को खलनायक के रूप में प्रस्तुत किया जाए। राहुल गांधी का इस तरह खुलकर विरोध किया जाए कि राहुल गांधी अपने को सबसे अधिक पॉपुलर नेता मानने लगे। भारतीय जनता पार्टी और राहुल गांधी के बीच जो नुरा कुश्ती चल रही है उस में राहुल गांधी पिछड़ते जा रहे हैं और उससे पूरा विपक्ष कमजोर हो रहा है। भाजपा चाहती है कि राहुल गांधी के नेतृत्व में विपक्ष आगे बढ़े और राहुल गांधी भी यही चाहते हैं कि उन्हीं के नेतृत्व में विपक्ष आगे बढ़े, जबकि उसमें कोई योग्यता नहीं है। ममता बनर्जी के अनुसार राहुल गांधी पूरे विपक्ष का खेल बिगाड़ रहे हैं और भाजपा के हाथों में खेल रहे हैं। मुझे भी यही लगता है कि भारतीय जनता पार्टी ने योजनाबद्ध तरीके से राहुल गांधी को इतना आगे बढ़ाया है अन्यथा राहुल में किसी प्रकार की कोई योग्यता नहीं है। महिलाओं के मामले में राहुल गांधी से झूठ बोलकर जो किरकिरी कराई है वह तो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

**17— पर्यावरणवादियों का व्यापार :—**

वर्तमान भारत में सबसे अच्छा व्यापार पर्यावरणवादियों का है। इसमें घर बैठे अच्छी कमाई हो जाती है। समाज सेवक का स्वरूप भी बना रहता है और मीडिया से भी काफी संपर्क रहता है। उपद्रवी लोग भी आपको हमेशा तैयार मिलते हैं और नेता भी आप से डरता है। पर्यावरण के नाम पर एक पहचान बना लीजिए फिर कहीं भी एक आंदोलन कर दीजिए, किसी उद्योग में बाधा पैदा कर दीजिए तो निष्चित ही आपकी अच्छी दुकानदारी चल पड़ेगी। वैसे तो आज सारी दुनिया में पर्यावरण के नाम पर अनेक दुकाने खुली हुई है लेकिन इस धंधे में भारत में बहुत ज्यादा तेजी दिख रही है। गांव गांव में पर्यावरण के नाम पर दुकानदारी करने वाले आपको मिल जाएंगे। जिनका कोई व्यापार नहीं है, जिन्होंने कोई पेड़ नहीं लगाया है, जिन्होंने समाज की कभी सेवा नहीं की है, जिन्होंने पेड़ों के नाम पर सिर्फ दुकानदारी की है,ऐसे लोग अब गांव—गांव में मिल जाएंगे। आवश्यकता इस बात की है कि इस प्रकार के पर्यावरणवाद के नाम पर विकास को रोकने वाले पेशेवर लोगों से हमें मुक्ति पानी चाहिए।

**18— कटघरे में दोनों, पर्यावरणवादी या मानवाधिकारवादी :—**

जिस तरह पर्यावरणवादियोंकी भूमिका देश के विकास में बाधक की है ठीक उसी तरह की भूमिका मानवाधिकारवादियों की भी है। इन्हें दुनिया के अनेक देशों से इसलिए धन मिलता है कि भारत में कल कारखाने बंद करा सकें, मानवाधिकार के नाम पर सरकारों को परेशान करते रहें।ये लोग पुलिस पर झूठे आरोप लगाते हैं। विदेशी पैसे के बल पर इनकी दुकानदारी फलती—फूलती रहती है। पिछले कुछ समय से इस प्रकार के नकली पर्यावरणवादी और मानवाधिकारवादी कटघरे में खड़े हैं।अब इनके एनजीओ की जांच हो रही है तो यह सभी छटपटा रहे हैं। यह विदेशियों के साथ मिलकर षड्यंत्र कर रहे हैं लेकिन वर्तमान सरकार मजबूती के साथ इन मानवाधिकारवादियों से निपट रही है। मानवाधिकार के नाम पर सामाजिक संस्थाओं के बोर्ड लगाकर इन लोगों की दुकानदारी बहुत गलत दिशा में जा रही है। यह आंदोलन करते रहते हैं क्योंकि ये आंदोलनजीवी हैं, परजीवी हैं और समाज के शत्रु हैं।

**19— हर्ष मंदर अब कहाँ जाएँगे :—**

पता चला है कि एक और कट्टर ईमानदार सीबीआई अधिकारी जांच के घेरे में आ गए हैं। हर्ष मंदर एक जाना पहचाना नाम है। आरोप लगा है कि हर्ष मंदर ने बड़ी मात्रा में विदेशों से धन लिया और उसे छुपाया। अब इस मामले की सीबीआई जांच शुरू हो रही है। हर्ष मंदर हमारे बिलासपुर कमिश्नरी में कमिश्नर थे। उनकी नक्सलवादियों के प्रति सहानुभूति प्रसिद्ध है। मैं भी इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त व्यक्ति हूँ। हर्ष मंदरने नौकरी से त्यागपत्र देकर सोनिया गांधी के साथ मित्रता कर ली थी। उन्हें मनमोहन सिंह के ऊपर निर्णय करने वाली कमेटी का अध्यक्ष चुना गया था।अब ऐसा लगता है कि वही कट्टर ईमानदार हर्ष मंदर जल्दी ही सत्येन्द्र जैन के साथ जेल में मुलाकात करेंगे।

25 वर्ष पहले हर्ष मंदर हमारे सरगुजा संभाग के कमिश्नर थे। मैं यहशुरू से ही समझता था कि संघ और गांधीवादीसंस्थाओं में ईमानदार लोगों का प्रतिशत बहुत अधिक है। दुर्भाग्य से ईमानदार गांधीवादियों का नेतृत्व कम्युनिस्ट कर रहे हैं और ईमानदार संघ वालों का नेतृत्व सावरकरवादी कर रहे हैं। यह दोनों ही ईमानदारों को कभी एक साथ नहीं होने देते। मैं लगातार यह प्रयत्न करता रहा कि संघ और सर्वोदय के ईमानदार लोग एक साथ बैठकर भारतीय संविधान पर विचार मंथन करें। यह बात हमारे कांग्रेसी नेताओं को बहुत बुरी लगी थी। उन्होंने मेरे ऊपर अनेक बार आक्रमण किए और 25 साल पहले हमारी मध्य प्रदेश सरकार ने मुझे नक्सलवादी घोषित करके मेरे खिलाफ बड़ी कानूनी कार्यवाही की। हमारे तत्कालीन कमिश्नर साहब हर्ष मंदर के पास जब हम लोग गए तो उन्होंने यह देखकर कि मुझे नक्सलवादी घोषित किया गया है, मुझे सब प्रकार की कानूनी रियायत दी। थोड़े दिनों के बाद ही उन्हें सच्चाई का पता चला कि यह तो वास्तव में कोई वामपंथी नहीं है, नक्सलवादी नहीं है बल्कि संघ और गांधीवादियों के बीच मेल–जोल कराकर संविधान पर रिसर्च कर रहे हैं तो उन्होंने मेरे विरुद्ध आदेश पारित कर दिए। मैं दोनों आदेशों को लेकर तत्काल उच्च न्यायालय गया और मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने हर्ष मंदर के आदेश को निरस्त कर दिया।न्यायालय ने मेरे पक्ष में निर्णय दे दिया। इस तरह मैं हर्ष मंदर को अच्छी तरह जानता हूँ कि वह पूरी तरह नक्सलवादी विचारों के समर्थक रहे हैं, कम्युनिस्ट हैं। बाद में तो उन्होंने जिस तरह एक ईमानदार प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को परेशान किया, वह जगजाहिर है। मेरे विचार से भारत के प्रधानमंत्रियों में व्यक्तिगत रूप से मनमोहन सिंह पूरी तरह ईमानदार रहे हैं और मनमोहन सिंह को भ्रष्टाचार के उद्देश्य सेजिस तरह गुलाम बनाकर रखा गया उसमें हर्ष मंदर की बहुत बड़ी भूमिका थी।

**20– शिकारी के शिकंजे में भ्रष्टाचारी :–**

अरविंद केजरीवाल ने आज एक विचित्र बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि नरेंद्र मोदी यह चाहते हैं कि भ्रष्टाचार यदि करना है तो बीजेपी में रहकर ही कर सकते हो, विपक्षियों को भ्रष्टाचार बिल्कुल नहीं करने देंगे। नरेंद्र मोदी की यह नीति ठीक नहीं है। मैं भी यही समझता हूँ कि नरेंद्र मोदी शुरू से इसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। नरेंद्र मोदी यह देख रहे हैं कि राजनीति में 99 प्रतिशत तक भ्रष्टाचार है और भ्रष्टाचार को यदि अकल से नहीं रोका गया तो उसकी कुर्सी भी खतरे में पड़ जाएगी। सारे भ्रष्ट लोग एकजुट हो जाएंगे। इसलिए नरेंद्र मोदी ने एक चालाकी की कि उन्होंने उन भ्रष्टों को तो नहीं छुआ जो सिर झुका कर चल रहे हैं और जिन लोगों ने भ्रष्टाचार भी किया और अकड़ भी रहे हैं उन लोगों को जेल के अंदर बंद कर दिया। मैं अरविंद केजरीवाल से जानना चाहता हूँ कि उनकी नीति क्या है? क्या अरविंद केजरीवाल अपने पार्टी के लोगों को भी भ्रष्टाचार करने की छूट देंगे और दूसरी पार्टी वालों को भी। अरविंद केजरीवाल को अपना कथन साफ करना चाहिए कि उनकी भ्रष्टाचार के संबंध में पॉलिसी क्या है? नरेंद्र मोदी की पॉलिसी साफ दिखती है कि पहले विपक्षी दलों के भ्रष्टाचारियों को जेल पहुंचा दिया जाए, उसके बाद अपनी पार्टी के भ्रष्ट लोगों के बारे में विचार किया जाएगा। मनीष सिसोदिया के जेल जाने के बाद अरविंद केजरीवाल को यह ज्ञान हुआ। क्या उन्हें पहले से नहीं मालूम था कि विपक्ष में रहकर मोदी भ्रष्टाचार नहीं करने देंगे, जेल भेजेंगे ही। इतना जानते समझते हुए भी अरविंद केजरीवाल अब तक नासमझ बने रहे, यह बहुत विचित्र बात है।

**21– आन्दोलन उचित है या अनावश्यक :–**

मैंने तीन दिन पहले पर्यावरणवादियों और मानवाधिकारवादियों के विरुद्ध लेख लिखा था। मेरे इस लेख के अनुसार इस प्रकार का आंदोलन करने वाले लोग समाज को बहुत नुकसान पहुंचा रहे हैं। समाज में वर्ग संघर्ष फैलानेके नाम पर इन्हें विदेशी धन प्राप्त होता है। मेरे कुछ मित्रों ने इस पर एक प्रश्न किया कि क्या आदिवासियों, दलितों, गरीबों या वन अधिकारों के लिए लड़ने वाले पर्यावरणवादियों के विषय में आपका ऐसा आरोप उचित है? मैं इस संबंध में कहना चाहता हूँ कि यह मेरा आरोप नहीं है बिल्कुल सच है कि इस प्रकार का आंदोलन करने वाले लोगों को विदेशों से मदद मिलती है। यह पर्यावरण के नाम पर विकास के कार्यों को रोकते हैं। यदि यह लोग जंगलों की रक्षा की लड़ाई लड़ रहे हैं तो प्रश्न खड़ा होता है कि भारत की कुल भूमि में जंगल कितने हिस्से में हो। यह कौन तय करेगा कि जंगल का प्रतिशत कितना हो, खेतों का प्रतिशत कितना हो, रेलवे लाइन, मकान अथवा सड़कों का प्रतिशत कितना हो। कुआँ, तालाब, बांध आदि के लिए जमीन का प्रतिशत कितना हो।वैसे तो हर मामले में जमीन का प्रतिशत तय करने की जरूरत है। यदि जंगल वाले कहें की वनों की रक्षा होनी चाहिए तो जमीन कहां कटौती की जाएगी, इस बात पर भी विचार करने की जरूरत है।

आदिवासी, गैर–आदिवासी, दलित, पिछड़ा इस प्रकार की समाज में विभेदकारी नीतियां घातक हैं। हमारे पर्यावरण और मानवाधिकार के नाम पर आंदोलन करने वालों की दुकानदारी का सार यही है कि समाज को आदिवासी, गैर–आदिवासी, सवर्ण, दलित, गरीब और अमीर के बीच में विभाजन करके वे अपनी रोटी सेकते रहें। मैं अपने मित्रों से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि वर्ग निर्माण अब मत कीजिए इसके बदले समाज को शरीफ और बदमाश दो भाग में विभाजित होने दीजिए। आदिवासी और गैर–आदिवासी का किसी भी प्रकार का विभाजन पूरी तरह गलत है। जमीन का उचित विभाजन किये बिना किसी प्रकार का आंदोलन या सरकार पर दबाव डालना बिल्कुल गलत है।

**22– विकास चाहिये या विवाद? :–**

मैं छत्तीसगढ़ में सरगुजा संभाग के अंबिकापुर शहर में रहता हूँ। हमारे क्षेत्र में बड़ी मात्रा में राजस्थान सरकार को कोयला खनन का ठेका मिला है। हमारे इलाके के पर्यावरणविद् कोयला खनन को रोक रहे हैं क्योंकि उन्हें डर है कि इससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ेगा और जंगलों का बहुत नुकसान होगा वगैरह–वगैरह। मैं अभी तक नहीं समझा कि कुछ पर्यावरणविद् इस प्रकार

पर्यावरण के नाम पर कोयला खनन रोक रहे हैं।जबकिदूसरेप्रकार के पेशेवर लोग कोयले की माँग कर रहे हैं।उनका कहना है कि कोयले की कमी होने से बिजली घरों केबन्द होने का खतरा है इस लिए बिजली घरों को तुरंत कोयला पहुंचाने की आवश्यकता है। कोयला अगर विदेशों से मंगाया जा रहा है तो हमारे पर्यावरणविदों को कोई कष्ट नहीं है, कोयला अगर भारत में निकाला जा रहा है इनको कष्ट होता है। मुझे यह बात समझ में नहीं आती यह विदेशी एजेंट इस प्रकार का नाटक क्यों करते हैं। विदेशों से कोयला आ जाए तो बड़ी अच्छी बात है अगर कोयला बिजली घरों को न पहुंचे तब तो यह बहुत चिल्ला आएंगे अगर भारत में कोयला खोज कर निकाला जाए तब भी यह चिल्लाएंगे। चिल्लाना ही इनका धंधा है। अगर आप देखना चाहें तो हमारे सरगुजा जिले में आकर इसकी सच्चाई को देख सकते हैं।

**23– नाविक ही नाव डुबाए तो उसे कौन बचाए?:–**

परिवार का कोई बड़ा सदस्य शरीफ हो और नासमझ हो, तो उस परिवार की बर्बादी प्रत्यक्ष दिखती है। युधिष्ठिर भी इसके एक प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। मैं एक अन्य व्यक्ति को जानता हूँ जिसमें जुए की तरह ही सट्टा लगाने की आदत थी। अंत में उसने परिवार को बर्बाद कर दिया। उसे यह उम्मीद थी कि 10 बार में मैं एक बार अवश्य ही जीतूंगा। इसलिए वह हर बार हार कर दुगुनी रकम का सट्टा लगाता रहा। एक महीने में ही पूरा परिवार बर्बाद हो गया। दोस्तों और शुभचिंतकों का भी पचास करोड़ रूपए इस जुए में डूब गया। उसके पिताजी को भी जेल जाना पड़ा।

राहुल गांधी भी ठीक उसी दिशा में चल रहे हैं। राहुल गांधी राजनीतिक मामलों में लगातार जुआ खेल रहे हैं। पुलवामा में उन्होंने पहला दांव लगाया था। राफेल डील के मामले में दुगुना और दुवारा दांव लगा दिया। अंबानी के मामले में उन्होंने पूरी पार्टी और पूरे परिवार को ही दांव पर लगा दिया। परिणाम जो होना था वही हो रहा है। इस तरह के जुआ–सट्टा से कोई भी शरीफ आदमी की बर्बादी निश्चित है। राहुल गांधी की मूर्खता का भारतीय जनता पार्टी भरपूर लाभ उठा रही है। दुनिया जानती है कि भारत के मीडिया पर नरेंद्र मोदी की सबसे अधिक पकड़ है। यह भी साफ दिख रहा है कि अन्य विपक्षियों की तुलना में भारत का मीडिया राहुल गांधी को बहुत अधिक आगे ला रहा है। बिना भारतीय जनता पार्टी के इशारे के यह संभव नहीं था। जहां मीडिया को मैनेज करने में अरविंद केजरीवाल अरबों रुपए वार्षिक खर्च करते हैं, वहीं राहुल गांधी को बिना खर्चे के मिडिया में इतना महत्व मिलना अवश्य ही सोचनीय है। अब तो धीरे–धीरे ऐसा भी दिखने लगा है कि राहुल गांधी का राजनीतिक भविष्य जल्दी ही खत्म होने वाला है। साथ में कांग्रेस पार्टी भी रसातल में चली जाएगी और पूरा विपक्ष भी बिना सोचे समझे अगर राहुल के पीछे लग गया तो पूरे के पूरे विपक्ष के अस्तित्व पर खतरा आ जाएगा। भारतीय जनता पार्टी जिस गुप्त योजना पर काम कर रही है, ठीक उसी दिशा में भारत का विपक्ष जा रहा है। साफ साफ दिखता है कि राहुल गांधी ने 'चौकीदार चोर है' का नारा लगाकर बहुत अधिक गलत कार्य किया था लेकिन माफी माँग कर उस समय छूट गए थे। इस बार उन्होंने मोदी सरनेम पर आक्रमण करके गलती की, जो छोटी गलती थी और न्यायालय उन्हें इस मामले में भी माफ करना चाहता था। लेकिन राहुल गांधी ने अपना सारा भविष्य दांव पर लगा दिया और उसका बुरा परिणाम अब सामने आ रहा है। अच्छा हो कि विपक्ष सावधानी से सोचें। प्रियंका गांधी भी इस विषय पर गंभीरता से सोचें। कल की प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रियंका गांधी का चेहरा यह स्पष्ट कह रहा था कि सारे घटनाक्रम से वह बहुत चिंतित है।

**24– महात्मा गांधी की डिग्री :–**

जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल ने महात्मा गांधी की डिग्री को लेकर जो कुछ भी कहा था उस पर काफी विवाद किया जा रहा है। महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी ने नाराजगी दिखाते हुए बापू के डिग्री को लेकर न सिर्फ ट्वीट किए बल्कि मनोज सिन्हा को प्रमाण के तौर पर गांधीजी की आत्मकथा भी भेज दी है। सवाल ये है कि आखिर हकीकत क्या है?

जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा था कि महात्मा गांधी के पास लॉ की कोई औपचारिक डिग्री नहीं थी। वह सिर्फ हाई स्कूल डिप्लोमा किए हुए थे। उनके पास यूनिवर्सिटी की कोई डिग्री नहीं थी। इस पर महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मनोज सिन्हा जो बयान दे रहे हैं उस पर जरा वह गौर करें और इतिहास को ठीक से समझें। आपको बता दें कि उपराज्यपाल विद्यार्थियों के एक कार्यक्रम में बोल रहे थे और उन्हें समझाने के लिए उदाहरण दे रहे थे कि सिर्फ डिग्री होना एजुकेशन नहीं होता, एजुकेशन के असली मतलब को समझें। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के पास औपचारिक तौर पर यूनिवर्सिटी की लॉ डिग्री नहीं थी लेकिन वो लॉ प्रैक्टिस के लिए क्वालिफाइड थे और कौन कहेगा कि वो शिक्षित नहीं थे? इसके बाद महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के आदर्शों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। मनोज सिन्हा ने छात्रों को उनसे प्रेरणा लेने की नसीहत दी है।

उपराज्यपाल ने अपने बयान में कहा था– गांधी जी ने औपचारिक तौर पर यूनिवर्सिटी से लॉ डिग्री नहीं ली थी। इंडिया टीवी ने जब उनके इस बयान के पीछे के तथ्यों की पड़ताल की तो जानकारी सामने आई कि यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में ऑडिट क्लास किया था लेकिन गांधी जी ने लॉ की डिग्री नहीं ली थी। इनर टेंपल में लॉ की पढ़ाई पूरी करके उसकी परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके बाद ही उन्होंने लॉ प्रैक्टिस की अर्हता हासिल की थी। लेकिन वो सर्टिफिकेट था और सर्टिफिकेट एवं यूनिवर्सिटी डिग्री में फर्क होता है। जानकारों का कहना है कि इनर टेंपल लॉ कोर्स में कोई डिग्री नहीं देता, सिर्फ सर्टिफिकेट देता है। उपराज्यपाल ने अपने पूरे स्पीच में महात्मा गांधी की महानता के बारे में बताते हुए छात्र–छात्राओं को शिक्षा का असली

मकसद समझाने की कोशिश की थी। सिर्फ डिग्री हासिल करने के बजाय शिक्षा के असली महत्व को समझाने के लिए गांधी जी सहित कई लोगों के प्रेरक प्रसंग सुनाए।

तुषार गांधी ने भी अपने ट्वीट में माना है कि बापू ने एन्टॉयर लॉ में कोई डिग्री नहीं ली। फिर सवाल ये है कि आखिर ये विवाद क्यों? महात्मा गांधी के इनर टेंपल में लॉ से मिला सर्टिफिकेट इंडिया टीवी के पास मौजूद है और उसमें कही गई डिग्री शब्द का उल्लेख नहीं है बल्कि वह एक सर्टिफिकेट है।

तुषार गांधी वैसे भी अपने बयानों के लिए चर्चित रहते हैं और विवादों से पुराना नाता रहा है। विदेशी क्रेडिट कार्ड कंपनी द्वारा गांधी की छवि इस्तेमाल करने की अनुमति का मामला हो या एक पुस्तक में गांधी को मारने के संदर्भ में जाति विशेष को टारगेट करने का आरोप हो,तुषार चर्चित रहे हैं। कभी समाजवादी पार्टी का झंडा उठा चुके तुषार 2024 में किसी हाल में पीएम मोदी को हटाने का हुंकार भी भर चुके हैं। ताजातरीन विवाद है जब उन्होंने जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल को उनके बयानों के लिए आड़े हाथों लिया है।

**25– गांधी शहादत का दुरूपयोग :–**

आजकल राहुल गांधी की योग्यता अयोग्यता पर बहुत विवाद छिड़ा हुआ है। प्रियंका गांधी ने कल एक बड़ा बयान देकर इस विवाद को नया मोड़ दे दिया। प्रियंका गांधी ने कहा कि राहुल गांधी एक शहीद के पुत्र हैं, उनके परिवार के अन्य लोग भी शहीद हो चुके हैं। कांग्रेस पार्टी ने देश को स्वतंत्रता दिलाई है। राहुल गांधी ने भी अलग से एक बयान दिया कि मैं गांधी हूँ, सत्य और अहिंसा का पक्ष लेता हूँ, मैं सावरकर नहीं हूँ जो माफी माँग लूं। यह दोनों ही बातें सत्य की कसौटी पर गलत सिद्ध होती है। ना ही इंदिरा गांधी ने कोई शहादत दी है और ना ही राजीव गांधी ने। कांग्रेस पार्टी का भी स्वतंत्रता की लड़ाई में गांधी के पीछे चलने मात्र का ही योगदान रहा है। कोई स्वतंत्र भूमिका कांग्रेस की इसमें नहीं रही। इसीलिए इंदिरा गांधी या राजीव गांधी को शहीद कहना सच्चाई के विपरीत है। इंदिरा गांधी ने मेरे ही जैसे अनेक लोगों को राजनीतिक सत्ता के लिए जेल में बंद कर दिया था। अनेक लोग जेलों में शहीद भी हो गए। इंदिरा की जेलों में शहीद होने वालों को आज तक शहीद नहीं कहा गया। बल्कि राहुल गांधी की सरकारों ने तो इन शहीदों को मिलने वाली पेंशन भी बंद कर दी। ऐसे किसी तानाशाह को शहीद कहना तो शहादत का भी अपमान है। शहीद तो गांधी हुए थे, राजीव नहीं। राजीव गांधी ने तो दल–बदल कानून बनाकर राजनीति को गंदा करने का काम किया। ऐसे राजीव गांधी को शहीद कैसे माना जाए। इंदिरा ने और उनके परिवार ने गांधी के नाम का भरपूर दुरुपयोग किया। जबकि उसके परिवार को फिरोज गांधी के नाम से जाना जाना चाहिए। मैं गांधी शब्द का उपयोग करने और शहादत का रोना रोने वालों के खिलाफ हूँ। राहुल ने लिखा कि गांधी माफी नहीं माँगते। मैंने तो सुना है कि सजा होने के डर से एक बार इसी राहुल गांधी ने सर्वोच्च न्यायालय में माफी माँगकर अपनी जान बचाई थी। इस बार तो राहुल को जरा भी अंदाज नहीं था कि न्यायालय इतनी मामूली बात पर इतना कठोर दंड दे सकता है अन्यथा राहुल गांधी दूसरा मार्ग भी अपना सकते थे। शहीद का पुत्र होने के कारण किसी भी व्यक्ति को यह योग्यता प्राप्त नहीं हो जाती है कि वह पागल सरीखे अंड–बंड कुछ भी बकता रहे। प्रियंका गांधी के कथन पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

**26– गांधीगिरी की दुकानदारी :–**

बहुत लंबे समय से हम देखते आ रहे हैं कि भारत में गांधी के नाम पर दो गुट अपनी–अपनी दुकानदारी करते हैं। एक गुट ऐसे गांधीवादियों का है जिसमें वर्तमान गांधीवादी तथा सभी नेहरू के पक्षधर लोग स्वयं को गांधी का वारिस बताते फिरते हैं भले ही इनका गांधी विचार से कोई लेना–देना नहीं है। दूसरा गुट गांधी विरोधी सावरकरवादियों का है जो गांधी के नाम पर अपनी दुकान चलाना चाहते हैं। इनमें से अधिकांश तो गांधी का विरोध करने के लिए हिटलर तक की प्रशंसा करते हैं। एक तीसरा गुट ऐसे लोगों का है जो गांधी की नीतियों का पक्षधर है। तीसरे गुट में दस वर्ष पहले तक मैं कुछ गांधीवादियों और कुछ संघ वालों को मिलाकर गांधी की नीतियों के पक्ष में खड़ा करना चाहता था लेकिन पिछले दस वर्षों में देश की राजनैतिक परिस्थितियों में व्यापक बदलाव आया है और गांधी की नीतियों के समर्थन में नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत सरीखे अनेक शीर्ष लोग शामिल हो गए हैं। इस तीसरे गुट में कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा का नाम भी शामिल है। अनेक गांधीवादियों में गांधी के पड़पोते तुषार गांधी भी शामिल हैं। उन्होंने इस तीसरे गुट का विरोध किया। अधिकांश सावरकरवादी भी प्रत्यक्ष रूप से गांधी को गालियां देकर तथा परोक्ष रूप से मोदी, भागवत, बजरंगमुनि का विरोध करके इस तीसरे गुट का विरोध करते हैं। लेकिन इन सभी टकराव के बाद भी गांधी विचारधारा मजबूत हो रही है तथा गांधी के पक्ष–विपक्ष में दुकानदारी करने वाले नकली गांधी, सांवरकरवादी कमजोर पड़ते जा रहे हैं। हमारे गुट के मनोज सिन्हा ने गांधी की डिग्री के बारे में जो कुछ कहा उसकी सत्यता के विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है। मनोज सिन्हा ने यह कहा है कि गांधी की शिक्षा के मुकाबले गांधी का ज्ञान अधिक महत्वपूर्ण है। गांधी को विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं मिली थी लेकिन डिग्री का प्रमाण पत्र भी प्राप्त कर लिया और वकालत का लाइसेंस भी प्राप्त कर लिया था। यह गांधी की योग्यता का प्रमाण था। मैं स्वयं विश्वविद्यालय की डिग्री और कॉलेज की डिग्री के बीच में फर्क नहीं समझता, लेकिन मनोज सिन्हा ने गांधी की प्रशंसा की थी आलोचना नहीं। गांधी के नाम पर दुकानदारी करने वाले तुषार गांधी, गांधी की विचारधारा वाले मोदी, भागवत और बजरंगमुनि का विरोध करते रहते हैं। मनोज सिन्हा की बात गलत भी हो सकती है लेकिन उनकी नीयत गलत नहीं है। वहीं दूसरी ओर तुषार गांधी सही भी हो सकते हैं लेकिन उनकी नीयत सही नहीं है। तुषार गांधी स्वयं को गांधी का वारिस समझते हैं लेकिन जमाना बहुत बदल चुका है इसलिए गांधी के नाम पर दुकानदारी करने वालों का समय अब खत्म होता जा रहा है। देश अब गांधी की माला जपने वालों का नहीं बल्कि गांधी की नीतियों का पालन करने

वालों का बनता जा रहा है। वक्त आ गया है कि देश के शांतिप्रिय लोग, उन गांधीवादी और सावरकरवादियों के खिलाफ मजबूती से खड़े हों, जो गांधी के नाम पर दुकानदारी करते हैं।

## उत्तरार्द्ध

फरवरी महीने में रामानुजगंज का पहला ज्ञान यज्ञ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ज्ञान यज्ञ परिवार के लिए यह पहला इतना बड़ा आयोजन था जिसमें मुनि जी की भूमिका लगभग ना के बराबर रही। यहां तक कि मुनि जी ने यज्ञ की तैयारी में भी अपनी मामूली सी भूमिका निभाई और यज्ञ स्थल पर भी वह सिर्फ कलश यात्रा के दिन ही सही समय पर शामिल हो पाए। यह हम सब ज्ञानयज्ञ परिवार के लिए पहली परीक्षा थी जिसमें हम उम्मीद से कई गुना सफल हुए। लेकिन इस सफलता के साथ–साथ हम लोगों के बीच में एक चिंता की भी बात आयी कि वर्तमान समय तक हमारी सारी अर्थव्यवस्था बजरंग मुनि जी पर निर्भर है। उचित होगा कि ज्ञानयज्ञ परिवार आर्थिक मामलों में भी आत्मनिर्भर बने। वर्तमान समय में हमारी ज्ञान तत्व पत्रिका निकलती है जिस पर वार्षिक खर्च करीब डेढ़ सौ रूपये आता है। अर्थाभाव में यह पत्रिका अनियमित हो जाती है। हम लोगों का कार्यालय मुख्य रूप से रामानुजगंज में है लेकिन हम रायपुर तथा दिल्ली में भी आंशिक रूप से सक्रिय हैं। ज्ञानयज्ञ परिवार के लिए यह आवश्यक है कि देशभर में इस योजना का विस्तार हो। अर्थाभाव के चलते हम लोग ऋषिकेश के बाद ज्ञान कुंभ जैसा कोई भी बड़ा आयोजन नहीं कर सके। अब सारी जिम्मेदारी हम आप पर अर्थात ज्ञान यज्ञ परिवार तथा सहयोगी संस्थाओं पर भविष्य में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति में हमें पहले से ही इसकी तैयारी कर लेनी चाहिए। यज्ञ में उम्मीद से ज्यादा उपस्थिति और सहभागिता रही इसलिए खर्च भी कुछ अधिक ही हुआ, जो दान से पूरा नहीं हो सका।

यज्ञ के पहले यह योजना बनी थी कि यदि खर्च अधिक होगा तो ज्ञान यज्ञ परिवार के सभी सदस्य सौ रूपये का अतिरिक्त दान करेंगे। लेकिन विचार किया गया कि सदस्यता का यह तरीका व्यावहारिक नहीं है। अनुभव में यह भी देखा गया कि यज्ञ का कार्य तो इस तरीके से सम्पन्न हो सकता है लेकिन अन्य कार्यालयीन खर्चे, ज्ञान तत्व पत्रिका का नियमित प्रकाशन तथा ज्ञान कुंभ अथवा कार्यालय के अन्यविस्तार संबंधी कार्य आगे नहीं बढ़ पाएंगे। इसलिए हम सब मित्रों ने इस परिस्थिति पर आप सबके साथ विचार मंथन की योजना बनाई है। हम सब साथी मिलकर कई दिनों तक विचार करने के बाद भी किसी अंतिम निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सके और अब पहली जून तक इस संबंध में कोई अंतिम निष्कर्ष निकालने की योजना बना रहे हैं। हम मई माह के अंतिम सप्ताह में फिर बैठेंगे और आप सब के सुझाव को आधार बनाकर निर्णय करेंगे। इस संबंध में आप सबके सुझाव आमंत्रित हैं। हम आपसे निवेदन करते हैं कि ज्ञान यज्ञ परिवार को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने के लिए आप फोन या पत्र द्वारा हमें सुझाव देने की कृपा करें।

निवेदक्
प्रमोद केसरी 9340890792

पता– बजरंग लाल अग्रवाल
पोस्ट बाक्स नं0 15
रायपुर छत्तीसगढ़ 492001